शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नैतिक मूल्य : मनुष्यता की पहचान

डॉ. ममता गोखे
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
आय.पी.एस. एकेडमी
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

नैतिक शब्द मुख्यत कर्म एवं शील का विशेषण है। कर्म और शील के विषय मे सत् और असत् का विवेचन ही नैतिकता का मुख्य प्रश्न है। ये प्रश्न सदा और सर्वत्र महत्वपूर्ण रहे हैं। इसमें लौकिक एवं दार्शनिक चिंतन का निकट संस्पर्ष रहता है। नीति वह मार्ग है जिस पर चलकर संपूर्ण जीवन को आनंदप्रद बनाया जा सकता है। नैतिकता मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बिना मानव का सामूहिक जीवन कठिन हो जाता है। अच्छा-बुरा सही-गलत के मापदण्ड ही मूल्य कहलाते हैं और भारतीय परम्परा में ये मूल्य ही धर्म कहलाते हैं। धर्म का आशय है मानवोचित आचरण संहिता। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मापदंड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव से कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। प्रस्तुत शोध पत्र में नैतिक मूल्य और मनुष्यता में सहसम्बन्ध स्थापित किया गया है

प्रस्तावना

जीवन संघर्ष को घटाने और सहयोग को बढ़ाने के लिए मनुष्य अपने बुद्धि विवेक से ऐसे उदात्त नियमों आदर्शों, सिद्धान्तों, प्रतिमानों और संकल्पों की संरचना करता है, जो उसके जीवन को समुचित गति देने मार्गदर्शन करने और समायोजन करने में सहायक होते हैं और जिनके माध्यम से वह समरस और शांत जीवन जीने मे समर्थ हो पाता है। ऐसे नियमों को नैतिक मूल्य कहा जाता है।

नैतिक शब्द मुख्यत: कर्म एवं शील का विशेषण है। कर्म और शील के विषय मे सत् और असत् का विवेचन ही नैतिकता का मुख्य प्रश्न है। ये प्रश्न सदा और सर्वत्र महत्वपूर्ण रहे हैं और इसमें लौकिक एवं दार्शनिक चिंतन का निकट संस्पर्श रहता है। नीति वह मार्ग है जिस पर चलकर संपूर्ण जीवन को आनंदप्रद बनाया जा सकता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी नीति शब्द को इस प्रकार परिभाषित करते हैं, "समाज को स्वस्थ एवं संतुलित पथ पर अग्रसर करने एवं व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति कराने के लिए जिन विधि या निषेधमूलक वैयक्ति एवं सामाजिक नियमों का विधान देश, काल और पात्र के संदर्भ में किया जाता है उन्हें नीति शब्द से अभिहित करते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार नैतिकता का ज्ञान ही वास्तविक शिक्षा है। नीति सदैव एक रूप की नहीं रहती। देश-काल की परिस्थिति उसके रूप में भेद किया करती है। अतः कब किस नीति का अनुकरण किया जाए यह बहुत कुछ देश काल पर अवलंबित है। शुभ और श्रेष्ठ जीने की कामना करने वाले मनुष्य और समाज के लिए नीति का दायरा व्यापक होता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष संबंधी अनेक विषय नैतिकता के क्षेत्र

में आते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र में उन नियमों और अनुशासनों की विवेचना की जाती है जो व्यक्ति और समाज की स्थिति के कारण भी है और लक्ष्य भी। नीतिशास्त्र व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के नियमन के नियम निर्धारित करता है इसीलिए शुक्रनीतिसार (1-4) में कहा गया - सर्वलोक व्यवहार स्थितिः नित्ये: विना नहि। अर्थात नीतिशास्त्र के बिना संपूर्ण लोक व्यवहार की स्थिति संभव नहीं है।

नीति और मूल्य

साहित्यिक दृष्टि से मूल्यों का अंकन करते हुए महादेवी वर्मा ने कहा कि जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है। ऐसे सिद्धान्तों को हम जीवन मूल्य कहते है। डॉ. बैजनाथ ने मूल्य को व्यापक अर्थ देते हुए कहा ऐसी कोई भी वस्तु मूल्य हो सकती है जो जीवन को गति प्रदान करती है। उसे संरक्षित करती है।

निष्कर्ष रुप में मूल्य ऐसे उदात्त नियमों की अवधारणा का नाम है, जो जीवन के प्रत्येक चरण में शुभ और श्रेष्ठ आचरण करने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है, जिससे वह अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

नीति और मूल्य दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। दोनों का संबंध साधन और साध्य रूप में भी है। साधन रूप में नैतिकता मूल्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होती है और लक्ष्य के रूप में वह मूल्य को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है।

नैतिक मूल्यों को भारतीय परंपरा में धर्म का पर्याय भी माना जाता है। हिन्दी विश्वकोश में धर्म, अर्थ नैतिक गुण बताया गया है। भगवद्गीता में वर्णाश्रम के अनुसार कर्तव्यों का पालन ही धर्म माना गया स्वधर्मे निधनं श्रेयः महाभारत के अनुशासन पर्व और वनपर्व में अध्ययन दान, तप, सत्य, क्षमा और इंद्रियों का संयम तथा लोभ त्याग-धर्म के ये आठ मार्ग बताए गए हैं।

सांराश रूप में कह सकते हैं कि नीति जीने के लिए आवश्यक है। इसमें मुख्य रूप से तीन दृष्टियों (1) व्यक्तिनिष्ठ (2) वस्तुनिष्ठ तथा (3) आधिभौतिक या पारलौकिक से विचार किया जाता है। वास्तव में ये सब लक्षण नैतिक मूल्य ही हैं।

नैतिक मूल्य और शिक्षा

नैतिकता का सम्बन्ध मानवीय अभिवृत्ति से है इसलिए शिक्षा से इसका महत्वपूर्ण अभिन्न व अटूट सम्बन्ध है। कौशलों व दक्षताओं की अपेक्षा अभिवृत्ति मूलक प्रवृत्तियों के विकास मे पर्यावरणीय घटकों का विशेष योगदान होता है। यदि बच्चों के परिवेश में नैतिकता के तत्व पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं तो परिवेश में जिन तत्वों की प्रधानता होगी वे जीवन का अंश बन जायेंगे। इसीलिए कहा जाता है कि मूल्य पढ़ाये नहीं जाते अधिग्रहित किये जाते हैं।

मूल्यों की बात की जाये तो अलग-अलग संदर्भ में मूल्य शब्द का उपयोग होता है। जैसे मानवीय मूल्य और जीवन मूल्य। संभवतः इन सभी शब्दों के अर्थ एक ही हैं। ये उन गुणों की ओर संकेत करते हैं जिन्हें मनुष्य महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है तथा जिन मूल्यों के पालन करने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है। मूल्यों की व्याख्या त्रिस्तरीय की जा सकती है। व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय। इन स्तरों पर मूल्यों को निर्धारित करना और उनके निर्वहन के लिये समग्र प्रयास करना स्वस्थ समाज की मूलभूत आवश्यकता है। जीवन मूल्यों को पारिभाषित करते हुए उनका विस्तार से अध्ययन करना किसी भी चिंतनशील समाज

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के लिये प्राथमिक कार्य होना चाहिए। वास्तव में नैतिक गुणो की कोई एक पूर्ण सूची तैयार नही की जा सकती तथापि संक्षेप में हम इतना कह सकते हैं कि हम उन गुणों को नैतिक कह सकते हैं, जो व्यक्ति के स्वयं के सर्वांगीण विकास और कल्याण में योगदान देने के साथ-साथ किसी अन्य के विकास और कल्याण में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचाए। नैतिक मूल्यों की जननी नैतिकता सद्गुणों का समन्वय मात्र नहीं है, अपितु यह एक व्यापक गुण है जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रिया-कलापों पर होता है और सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है।

नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कर्तव्य की आंतारित भावना है और उन आचरण के प्रतिमानों का समन्वित रुप है जिसके आधार पर सत्य असत्य अच्छा, बुरा उचित अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक के बल से संचालित होती है।

आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, महत्व और अनिवार्यता को इस बात से सरलता से समझा जा सकता है कि संसार के दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाशास्त्रियों, नीतिशास्त्रियों ने नैतिकता को मानव के लिए एक आवश्यक गुण माना है।

खेद का विषय है कि हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है। हमारी शिक्षा शिक्षार्थी में बोध जाग्रत नही करती। वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को खोजने के लिए प्रेरित करे और आत्मज्ञान की ओर ले जाये। सही शिक्षा वही हो सकती है जो शिक्षार्थी में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके।

नैतिक शिक्षा से नैतिक मूल्य का संचार होता है। यह कार्य घर, विद्यालय, मंदिर, मंच या किसी सामाजिक स्थान (जैसे पंचायत भवन) में किया जा सकता है। व्यक्तियों के समूह को ही समाज कहते हैं। जैसे व्यक्ति होंगे वैसा ही समाज बनेगा। किसी देश का उत्थान या पतन इस बात पर निर्भर करता है कि इसके नागरिक किस स्तर के हैं और यह स्तर बहुत करके वहां की शिक्षा पद्धति पर निर्भर रहता है। व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

प्राचीन काल की भारतीय गरिमा ऋषियों द्वारा संचालित गुरुकुल पद्धति के कारण ही ऊँची उठ सकी थी। पिछले दिनों भी जिन देशों ने अपना भला-बुरा निर्माण किया है, उसमें शिक्षा को ही प्रधान साधन बनाया है। जर्मनी इटली का नाजीवाद रूस और चीन का साम्यवाद जापान का उद्योगवाद, युगोस्लाविया, स्विजरलैंड, क्यूबा आदि ने अपना विशेष निर्माण इसी शताब्दी में किया है। यह सब वहां की शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने से ही संभव हुआ। व्यक्ति का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण बहुत सीमा तक उपलब्ध शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है।

नैतिकता मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बिना मानव का सामूहिक जीवन कठिन हो जाता है। नैतिकता से उत्पन्न नैतिक मूल्य मानव की ही विशेषता है। नैतिक मूल्य ही मनुष्य को मान्नव होने की श्रेणी प्रदान करते हैं। अच्छा-बुरा, सही-गलत के मापदण्ड ही मूल्य कहलाते हैं और भारतीय परम्परा में ये मूल्य ही धर्म कहलाते हैं। धर्म का आशय है मानवोचित आचरण संहिता। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मापदंड ही नैतिक मूल्य है नैतिक मूल्यों के अभाव से कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित आंतरिक व अंतःस्फूर्त तत्व है, जो व्यक्ति के व्यक्तिव के विकास में आधार का कार्य करते हैं।

नैतिक मूल्य और सामाजिक जीवन

नैतिक मूल्यों का विस्तार व्यक्ति परिवार से विश्व तक जीवन के सभी क्षेत्रों में होता है। व्यक्ति-परिवार समुदाय, समाज, राष्ट्र से मानवता तक नैतिक मूल्यों की यात्रा होती है। नैतिक मूल्यों के महत्व को व्यक्ति समाज राष्ट्र व विश्व की दृष्टियों से देखा-समझा जा सकता है। सामाजिक जीवन में तेजी से हो रहे परिवर्तन के कारण उत्पन्न समस्याओं की चुनौतियों से निपटने के लिए और नवीन व प्राचीन के मध्य स्वस्थ अंतः क्रिया को सम्भव बनाने में नैतिक मूल्य सेतु-हेतु का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियों व प्रक्रिया गति पाती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है।

नैतिकता समाज, सामाजिक जीवन को सुगम बनाती है और समाज में अप्रत्यक्ष रुप से नियंत्रण रखती है। समाज-राष्ट्र में एकीकरण और अस्मिता की रक्षा नैतिकता के अभाव में नहीं हो सकती है। विश्व बंधुत्व की भावना मानवतावाद, समता भाव प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

निष्कर्ष

वर्तमान विश्व के विकास के प्रमुख आधार विज्ञान और प्रौद्यौगिकी हैं। वर्तमान विश्व में न केवल ज्ञान का विस्फोट, जनसंख्या का विस्फोट गतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आदि हो रहे हैं। अपितु हमारे परिवार तथा समाज का ढांचा भी उसी गति से परिवर्तित हो रहा है। प्रचार-विचार विमर्श तथा विचार विनिमय के नवीन प्रभावी साधन विकसित हो रहे हैं। इन सभी का हमारे नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान आधारित विकास को जीवन शक्ति हमारे नैतिक एवं आध्यात्मिक आधारों से प्राप्त हो।

संदर्भ ग्रंथ

1. *डॉ. दिवाकर पाठक, भारतीय नीतिशास्त्र, पृष्ठ 2*
2. *पं. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी नीति काव्य, पृष्ठ 4*
3. *डॉ. राजबली पाण्डेय, भारतीय नीतिशास्त्र का विकास, पृष्ठ 1*
4. *डॉ. बैजनाथ सिंहल नई कविता मूल्य मीमांसा पृष्ठ 87*
5. *नगेन्द्र नाथ बसु, हिंदी विश्वकोश भाग -11, पृष्ठ 100 से 126*
6. *भगवदगीता, पृष्ठ 35*
7. *माहभारत, वनपर्व, पृष्ठ 275*
8. *नवनीत हिन्दी*